The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 8 | August 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

वैश्वीकरण के दौर में भारत पर प्रभाव का विष्लेषणात्मक अध्ययन।

Dr. Bhuwaneshwar Manjhi

Ph.D., Political Science, Sido Kanhu Murmu University, Dumka, Jharkhand

Email-Krbhanu72@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17114206

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 19-08-2025

Published: 10-09-2025

Keywords:

वैश्वीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, अंतर्राष्ट्रीय, औद्योगिक,

ABSTRACT

भूमण्डलीकरण, उदारीकरण तथा निजीकरण की नीति का मिश्रित परिणाम है। इसके अन्तर्गत आर्थिक गतिविधियों के साथ जुड़ने की छूट होती है। जैसे कच्चा माल विश्व एक हिस्से में सस्ता मिलता हो, श्रम दूसरे हिस्से से सस्ता मिलता हो, पूंजी और संयंत्र किसी तीसरे हिस्से में सुलभ हो और बाजार दूर–दूर फैले हो तो यह प्रक्रिया भूमण्डलीकरण कहलाती है। इसमें देशों की सीमाएं आर्थिक गतिविधियों के लिए खोल दी जाती है। इस नीति को 1980 के दशक में विश्व में मान्यता मिली है। इसमें संचार क्रांति का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्तमान में भूमण्डलीकरण की नीति ने आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, परिवहन, संचार व राजनीतिक प्रणाली के परस्पर समन्वय के कारण सम्पूर्ण विश्व में एक वैश्विक ग्राम का रूप धारण कर लिया है। इसमें व्यक्ति और संस्थाओं, कम्पनियों में पारस्परिक निर्भरता, एकीकरण और अन्तःक्रिया को बढ़ावा मिला है। वैश्वीकरण से उत्पन्न व्यापक परिवर्तनों से हमारे जीवन का कोई भी पहलू इससे अछूता नहीं है। जिस प्रकार वैज्ञानिक खोजों ने आधुनिकता को सुसाध्य बनाया है और ज्ञानोदय ने मनुष्य के भ्रम से परदा उठाया है उसी तरह हम आज एक अन्य युग के प्रवेश द्वार पर खड़े हैं। पूंजीवाद, उद्योग और राष्ट्र राज्य जैसी बड़ी–बड़ी संस्थाएं जिनका जन्म आधुनिकता के साथ हुआ, उनके स्वरूप में भी आज व्यापक बदलाव आ गया है। इस प्रकार वे जो भूमिका निभा रहे हैं उनमें भी परिवर्तन आया है। आज वर्तमान परिदृश्य को समझने के लिए नई दृष्टि की आवश्यकता है। चीजों को नए प्रकाश में देखने की आवश्यकता है। चूंकि पुरानी संरचनाओं में परिवर्तन आ रहा है इसलिए उनकी पुरानी पहचान भी समाप्त होती जा रही है। आज वर्ग,

लिंग, जाति और राष्ट्रीयता की सांस्कृतिक भूमि का विखंडन देखा जा सकता है जिसने कभी सामाजिक प्राणियों को दृढ़ता प्रदान की थी। यहां तक कि अर्थव्यवस्था और राज्यव्यवस्था के क्षेत्र में हम भावी खतरों का भी अनुमान नहीं लगा सकते हैं। हालांकि एक चीज निश्चित है कि हम वैश्वीकरण के लाभों को नहीं झूठला सकते। अतः वैश्वीकरण के प्रति अपने दरवाजे बंद करने की बजाय हमें इसके लाभ और हानि के मध्य प्रभावी संतुलन स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए।

उद्देष्यः–

वैश्वीकरण की प्रकृति का विस्तृत अध्ययन किया जायेगा। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व दो खेमों में बंट जाता है। एक अमेरिकी गुट दूसरा सोवियत संघ रूस की गुट, साथ ही औद्योगिकीकरण का दौर शुरू होता है, शीत युद्ध के कार्यकाल में विश्व में कूटनीतिक युद्ध भी प्रारंभ होता है। तत्पश्चात् 1990 के बाद सोवियत संघ का विघटन होता है, और वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण का दौर शुरू होता है, इसका प्रभाव भारत देश में भी व्यापक रूप से देखा जाता है। इसका विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

वैश्वीकरण की प्रकृति :– वैश्वीकरण विशेषज्ञ विभिन्न विषयों पर एक–दूसरे से मतभेद रखते है। वे मुख्य ध्यान विश्व में एक व्यवस्था होने पर लगाते हैं। साथ ही उन वैश्विक प्रक्रियाओं पर ध्यान देते हैं जो कि समाज व राष्ट्रों से अलग व स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखती है। वैश्वीकरण से सम्बन्धित सिद्धान्त अभी पूर्ण विकसित नहीं हो पाए है, परन्तु इन्हें आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, सामरिक तथा संस्थागत रूपों में बाँटा गया है। वैश्वीकरण की अवधारणा नई नहीं है। यह प्रक्रिया तो प्राचीन समय से चल रही है। औद्योगिक क्रांति ने भी उद्योग तथा तकनीक से मानवीय संवाद व आदान–प्रदान को बढ़ावा दिया। सूचना व संचार जगत् में आई क्रांति ने तो वस्तुओं, पदार्थों, तकनीकों, संसाधनों, विचारों और विशेषज्ञता के क्षेत्र को व्यापक बनाया है। साथ ही यात्रियों व पर्यटकों के रूप में लोगों के आवागमन को भी बहुत् बढ़ा दिया है। विंसेट वाइ चेंग बांग ने वैश्वीकरण की चार दशाएँ बतायी हैं[1]–

- खोज व अन्वेषण का युग (1492–1789), जो कि व्यापार व प्राचीन भंडारण के रूप में सामने आया। इसका प्रतीक कोलम्बस द्वारा की गयी अमेरिका की खोज को माना जा सकता है।
- क्रांति, मुद्रा व साम्राज्यों का युग (1789–1900), जिसकी झलक फ्रांसीसी क्रांति व ब्रिटेन में 18वीं शताब्दी की उत्पादन क्रांति से उपजे औद्योगिक साम्राज्यवाद से मिलती है।
- अतिवादी युग (1900–1970), प्रथम विश्वयुद्ध तथा रूस की बॉलशेविक क्रांति के दौरान एकाधिकारी पूँजीवाद इसका प्रतीक है।

- सूचना का युग (1970 से लेकर वर्तमान तक) यह वैश्वीकरण की प्रक्रिया से प्रकट होता है। इसकी विशेष बात बर्लिन की दीवार का टूटना तथा सोवियत संघ का विघटन रही।

वैश्वीकरण आखिर क्या है तथा इसके प्रमुख घटक क्या है? इसके लिए वैश्वीकरण की कोई सार्वभौमिक परिभाषा नहीं है। शुद्ध रूप में वैश्वीकरण का अर्थ भौगोलिक सीमाओं का न होना तथा भौगोलिक दूरियों की समाप्ति माना जा सकता है। इसके तात्पर्य विभिन्न देशों व व्यक्तियों से सम्बन्धित विचारों, तकनीकों, संस्कृतियों तथा अर्थव्यवस्थाओं के बीच घटती दूरियों व त्वरित आदान–प्रदान भी है इस प्रक्रिया को बढ़ावा देने में उन बहुराष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय तथा गैर सरकारी संगठनों की प्रमुख भूमिका रही है। जिन्होंने विश्व समुदाय की चिन्ताओं व हितों को मुखर रूप से उठाया है। शीतयुद्ध काल की समाप्ति व सोयिवत संघ के विघटन के बाद वैश्वीकरण को लेकर विश्व में गर्म बहस छिड़ी हुई है। न्यूयार्क टाइम्स के विदेश मामलों के स्तम्भकार थॉमस एल. फ्रीडमन का मानना है कि, वैश्वीकरण व्यवस्था ने शीतयुद्धकालीन व्यवस्था की जगह ले ली है। फ्रीडमन समझाते है कि वैश्वीकरण ने बाजार व्यवस्था को बढ़ाया है। साथ ही इसने समान वैश्विक संस्कृति को भी पनपाया है जो मुख्य रूप से विश्व स्तर पर अमेरिकी संस्कृति का प्रसार ही है। वर्ष 1999 की मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार, वैश्वीकरण का अर्थ वैश्विक बाजार, वैश्विक तकनीक, वैश्विक विचार तथा वैश्विक एकता को बढ़ाकर सभी स्थानों पर आम आदमी के जीवन स्तर में सुधार लाना है।[2] रिपोर्ट के अनुसार वैश्वीकरण के नये रूप का अर्थ नये बाजार, नये अभिनेता, नये नियम व प्रचलन तथा संचार की नई तकनीकों का प्रसार है। इसने राज्यों व सभाओं के बीच संवाद तथा आपसी सम्पर्कों को भी बढ़ावा दिया है। अन्दर्राष्ट्रीय राजनीति के विशेषज्ञ वैश्वीकरण की प्रक्रिया से राष्ट्र राज्यों के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों जैसे कि उनका स्वायत्तता, अर्थव्यवस्था, मानवीय सुरक्षा व विकास से भी जूझने का प्रयास कर रहे है। विशेषज्ञ वैश्वीकरण प्रक्रिया के विभिन्न सभ्य समाजों, एशिया तथा लैटिन अमेरिका की अधिनायकवादी सरकारों व खाड़ी तथा मध्य पूर्व के तानाशाहों पर पड़ने वाले प्रभावों का भी अध्ययन कर रहे हैं। वैश्वीकरण प्रक्रिया के बढ़ने का एक प्रभाव क्षेत्रीयवाद के पनपने के रूप में भी सामने आया है। वैश्वीकरण प्रक्रिया के अन्तर्गत अपने हितों को बढ़ावा देने के लिए क्षेत्र के सदस्य देशों के बीच एकीकरण भी बढ़ा है। क्षेत्रीयवाद शुरू में विश्व में स्थापित हो रही बड़ी आर्थिक शक्तियों जैसे यूरोपीय संघ की प्रतिक्रिया में और आर्थिक विकास की इच्छा के परिणामस्वरूप पनपा था। बाद में क्षेत्रीय व्यापार की प्रक्रियाओं ने विभित्र आकार लिये तथा विश्व के विभिन्न भागों में अलग–अलग तरह से व्यापार प्रक्रिया विकसित होती गई। इसका संकेत, पश्चिमी यूरोप में बढ़ रहे आर्थिक संरक्षणवाद से भी मिलता है। यह संरक्षणवाद विकासशील देशों की कीमत पर एकीकृत स्थायी व खुशहाल यूरोप स्थापित करने की दिशा में था। यूरोपीय संघ में व्यापार नियमों व व्यवस्थाओं का विकासशील राष्ट्रों द्वारा कड़ा विरोध किया जा रहा है। विकासशील राष्ट्र भेदभाव सहित व्यापार व्यवस्था चाहते हैं। इसके बावजूद भी. क्षेत्रीयवाद का विश्व व्यवस्था में व्यापार, निवेश, पूँजी आधारित तकनीक के हस्तांतरण व कूटनीति पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

वैश्वीकरण : भारतीय समाज व अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

वैश्वीकरण के युग में विश्व अर्थव्यवस्था वर्तमान में एक गंभीर दौर से गुजर रही है। आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण एवं बेड़ी विहीन पूंजीवादी बाजार व्यवस्था ने विकासशील, समाजवादी एवं अर्द्ध विकसित देशों को संदेश दिया कि राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था से आर्थिक विकास की गति धीमी पड़ी है। यह तर्क भारत तथा चीन जैसे घनी आबादी के देशों को आश्वस्त करने लगा जिसके अंतर्गत चीन ने 1978 में और भारत ने 1991 में आर्थिक सुधारों को लागू किया।[3] विकास के समाजवादी मॉडल को त्यागकर पूंजीवादी बाजार की अर्थव्यवस्था को ग्रहण किया। निःसंदेह, आर्थिक उदारीकरण एवं संरचनात्मक सुधारों के कारण भारत और चीन की अर्थव्यवस्थाओं को ऊंचाईयाँ प्राप्त हुई। वर्तमान में इन दोनों देशों की सबसे तेजगति से चलने वाली अर्थव्यवस्थाएँ हैं, यद्यपि 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के कारण इनकी आर्थिक वृद्धि की दर में गिरावट अवश्य आई है। जहाँ चीन की आर्थिक वृद्धि की दर 12 प्रतिशत हुआ करती थी वह 2015 में 6.9 प्रतिशत रह गई। विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार विश्व में आई आर्थिक मंदी का प्रभाव चीन पर पड़ा है। अमेरीका सबसे बड़ा चीन का आयातक देश है। अमेरिका व यूरोप जो चीनी वस्तुओं के सबसे बड़े आयात करने वाले देश थे, उन्होंने चीन से भारी मात्रा में आयात कम कर दिया है। इसका सीधा दुष्प्रभाव चीन के औद्योगिक उत्पादन एवं निर्यात पर पड़ा है। ऐसी स्थिति में चीन की आर्थिक विकास की दर सन् 2016 में 63 प्रतिशत और सन् 2017 में 6 प्रतिशत अनुमानित थी।

वैश्विक आर्थिक संकट नया नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संकट की पुनरावृत्ति है। 1980 के दशक में मेक्सिको में ऋण संकट पैदा हुआ 1990 के अंतिम दशक में रूस और पूर्वी एशिया के देशों में वित्तीय संकट उत्पन्न हुआ। इन संकटों को ध्यान में रखते हुए जी–7 की सरकारों, ब्रेटनवुड्स संस्थाओं और अन्य राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय नियामक एजेंसियों ने वित्तीय व्यवस्था को दुरूस्त बनाने के लिए विश्व बाजारों में पारदर्शिता एवं जवाबदेही की आवश्यकता पर बल दिया। भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक सुधारों की वकालत की गई। उधार व्यवस्था पर बैंक के नियमन व्यवस्था एवं मोनिटरिंग की आवश्यकता पर बल दिया गया।

वैष्वीकरण का भारत पर प्रभावः–

प्रारंभ में भूमण्डलीकरण एक आर्थिक परिघटना थी परन्तु कालान्तर में इसने आर्थिक क्षेत्रों सहित सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा अंतराष्ट्रीय राजनीति को भी प्रभावित किया है। डेविड हेल्ड के अनुसार भूमण्डलीकरण पर विचारों को तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है[4]–अतिवादी , निराशावादी तथा परिवर्तनवादी, अतिवादियों का मत है कि यह अच्छा है तथा आने वाले समय में जारी रहेगा। परिवर्तनवादियों का मानना है कि यह एक ऐसा अंतः संबंध निर्मित करता है जिसमें अप्रत्यक्ष रूप से शक्ति का प्रयोग होता है और यह अभूमण्डलीकरण में पलट सकता है। निराशावादियों का मानना है कि यह विश्व का पश्चिमीकरण करता है तथा समाज पर इसके प्रतिकुल प्रभाव पड़ते हैं। इनसे स्पष्ट है कि समामजिक व्यवस्था पर इसके सकारात्मक एवं नाकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। भारतीय समाज पर भी इसके प्रभाव देखे जा सकते हैं।

भूमण्डलीकरण के सामाजिक प्रभाव

समाज वैज्ञानिकों ने भूमण्डलीकरण के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों पर चिंता एवं उत्साह दोनों ही दिखलाया है जिसे हम निम्न प्रकार से समझ सकते हैं[5]।

1. **सांस्कृतिक एकीकरणः**– भौगोलिक, राजनीति, धर्म, मूल्यों और परम्पराओं के सम्मिलित स्वरूप को हम संस्कृति कहते हैं। भूमण्डलीकरण के कारण विभिन्न संस्कृतियों का सीमारहित आवागमन हुआ है तथा मानवीय विवेक पर आधारित एक वैश्विक सभ्यता का निर्माण हुआ है जिसमें विश्व स्तर पर समान मूल्यों का विकास हो रहा है। इस प्रकार जो सांस्कृतिक विशिष्टता समय, स्थान और लोगों के समूहों तक सीमित थीं वो इन सीमाओं को तोड़कर वैश्विकता की ओर बढ़ रहा है। परन्तु रॉबर्टसन का मत है कि अंतराष्ट्रीय आवागमन से न केवल स्थानीय सांस्कृति के मूल्यों को दृढ़ता मिलती है बल्कि यह एक मिश्रित संस्कृति का विकास करता है जिसे उन्होंने ग्लोबलाइजेशन की संज्ञा दी है। मिश्रित संस्कृति के लक्षणों में फैसन, संगीत, नृत्य, फिल्म, एवं भोजन में बदलाव हम देख सकते हैं।
2. **नवीन मध्य वर्ग का उदयः**– भूमण्डलीकरण से परम्परागत मध्यम वर्ग की जगह एक नवीन मध्य वर्ग का उदय हुआ है। पुरे विश्व में इस वर्ग की भाषा, कार्यकलाप, मूल्य, खानपान और विचार एक समान होते जा रहे हैं। उनका रहन–सहन और तौर तरीके भी, भवन, होटल, रेस्टोरेंट, यातायात के साधन, संचार के साधन आदि एक जैसे हो गये हैं। उदाहरण के लिए हम देखते हैं कि भारत में मोबाइल फोन, विदेशी गाड़ियाँ, ब्राण्डेड कपड़ों तथा अन्य उपभोग के समग्रियों का उपयोग धड़ल्ले से हो रहा है जिसके चलते कुछ परम्परागत छोटे धंधे भी बन्द हो रहे हैं साथ ही मॉल संस्कृति इन मध्य वर्गों को स्थानीय एवं परम्परागत बाजार से दूर ले जा रहे हैं।
3. **उपभोग की प्रवृति में परिवर्तनः**– बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा अपने आर्थिक लाभों के लिए गहन प्रचार किया जाता है जिसके चलते लोगों के बीच पसंद नापसंद उन्हीं के अनुरूप बदल गया है।[6] जैसे सामाजिक परिस्थिति का परिचायक विदेशी वस्तुओं के स्वामित्व से निर्धारित हो रहा है उदाहरणार्थ एपल मोबाइल, विदेशी ब्राण्डों के वस्त्र, फास्ट फुड का सेवन, होटल रेस्टोरेंट में लंच आदि।
4. **भाषा पर प्रभावः**– इन्टरनेट, सोशल मिडिया तथा अन्य संचार के साधनो के सघन उपयोग एवं उनपर निर्भरता ने भाषा पर गहरा प्रभाव डाला है। बार्बर मानता है कि आज सूचनाओं, ज्ञान, मनोरंजन आदि की सीमाएं टूटती जा रही हैं और 'इन्फोटेन्मेंट टेली सेक्टर का विकास हो गया है। फलस्वरूप भाषाओं के प्रयोग को विकृत हुए हैं जैसे ठीक है की जगह ओके का प्रयोग। इसके अलावा भूमण्डलीकरण से विश्व में भाषाओं की संख्या भी घटती जा रही है। लोगों के आवागमन से एक जगह की भाषा दूसरी जगह वहां की भाषा में मिल कर एक नया स्वरूप बना लेता है साथ ही इन्टरनेट पर संवाद की भाषा संक्षिप्त एवं अशुद्ध हो गई है। स्थापित भाषाओं का व्याकरण तथा उनकी शुद्धता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा

है। कई भाषाओं का मिश्रण भी देखने को मिलता है जैसे हिन्दी इंगलिश मिला कर हिन्गलिस का विकास हो गया है जिसमें अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषाओं का मिल जुला स्वरूप व्यवहार में प्रचलित है।

5. **पर्यावरण विरोधी उपभोक्त संस्कृतिः–** भूमण्डलीकरण के कारण जो नई उपभोक्त संस्कृति विकसित हुइ है उसने असततीय उपभोग (Unsustainable Consumption) को बढ़ावा दिया है। हमारे दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुएं पर्यावरण के लिए हानिकारक हो रही हैं जैसे प्लास्टिक, ए0सी0, वाहन इलेक्ट्रोनिक के समानों का अत्यधिक उपयोग आदि से वायुमण्डल पर कुप्रभाव पड़ रहा है। विकसित राष्ट्रों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का अधिकाधिक दोहन होता है जो इस बात से प्रमाणित होता है कि विश्व के 6 प्रतिशत आवादी वाला अमेरिका विश्व के प्राकृतिक संसाधनों का 30 से 40 प्रतिशत दोहन करता है। विकसित देशों द्वारा फैलाये गये उपभोक्त संस्कृति ने पर्यावरण का खतरा बढ़ा दिया है। जिसका प्रभाव भारत जैसे देशों पर स्पष्ट देखा जा सकता है अम्लीय वर्षा जलवायु परिवर्तन तथा वैश्विक उष्मा का कुप्रभाव भारत झेल रहा है।
6. **सामाजिक मूल्यों में बदलावः–** भूमण्डलीकरण ने भारतीय समाज के मूल्यों में भी परिवर्तन ला दिया है। एकल परिवारों की संख्या में वृद्धि अंतर्जातीय एवं अंतर्धमीय विवाह एक दूसरे पर विश्वास का अभाव आभासी जिन्दगी पर निर्भरताए परम्पराओं का ह्रास, बुजुर्गों का तिरस्कार, सामाजिकता का अभाव, मानवीय भवनाओं पर भौतिक साधनों का वर्चस्व, इन्टरनेट से विवाह आदि इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। सामाजिक समरसता की जगह व्यक्तिगत लाभ ने घर कर लिया है।
7. **वैश्विक समाजः–** भूमण्डलीकरण के कारण संस्कृतियो का क्रॉस संबंध एवं आदान प्रदान से ग्लोबलाइज्ड सोसायटी का निर्माण हो रहा है। सभी समाज अब एक दूसरे से अंतःकिया कर रहे हैं तथा एक के सामाजिक मूल्य दूसरे में प्रवेश हो रहे हैं। आचार, विचार, व्यवहार, उपभोग की वस्तुएं, संचार के साधन, दुरियों का कम होना, सूचनाओं का वैश्विक स्तर पर त्वरित प्रसार आदि ने पूरे विश्व को एक समाज के रूप में विकसित कर दिया है। परन्तु निराशावादियों का मत है कि भूमण्डलीकरण के कुप्रभाव ज्यादा हैं तथा आज भी हम एक वैश्विक समाज की और एक वैश्विक सरकार की कल्पना नहीं कर सकते। निष्कर्ष अब धीरे–धीरे विश्व गैर भूमण्डलीकरण की ओर कदम बढ़ा रहा है। विकसित राष्ट्र आर्थिक लाभ के लिए अपना वर्चस्व बढ़ा रहे हैं वहीं दूसरे राष्ट्र अपना वर्चस्व कम होते देख कर रूख बदल रहे हैं जिसका ज्वलंत उदाहरण यूरोपिय यूनियन में दरार और इंगलैण्ड की ब्रेक्जिट नीति है। हानि उठा रहे राष्ट्रों ने अपना मुह मोड़ना शुरू कर दिया है। हाल ही में घटित चीन और अमेरिका के बीच ट्रेड वार को भी संदर्भित कर सकते हैं। वर्तमान कोरोना संकट ने भी भूमण्डलीकरण के समाप्ति के यह आसार दिखा दिया है। तथा वर्तमान समय में अमेरिका, भारत तथा रूस के बीच ट्रेडवार जारी है।

वैश्वीकरण का आर्थिक प्रभाव

भारत ने जून 1991 में आर्थिक सुधारों को लागू किया था। देश की बिगड़ती हुई अर्थव्यवस्था निर्यात–आयात व्यवस्था को पुनः पटरी पर लाने के लिए आर्थिक उदारीकरण अपरिहार्य हो गया था इसके प्रभावों को निम्नानुसार बतलाया जा सकता है[7]:–

- औद्योगिक लाइसेंस राज को कुछ अपवादों को छोड़कर समाप्त करना,
- निर्यात को बढ़ावा देना
- विदेशी पूंजी निवेश को बढ़ावा देना
- पब्लिक प्राइवेट साझेदारी को आगे बढ़ाना ताकि देश की आर्थिक विकास की गति में अभिवृद्धि, निरंतरता एवं स्थिरता को सुनिश्चित किया जा सके।
- आर्थिक उदारीकरण की गति को बनाये रखना।

निष्कर्षः–

उपरोक्त परिवर्तनों के फलस्वरूप जहाँ भारत की अर्थव्यवस्था में अभिवृद्धि हुई है वहीं आर्थिक मूलभूत ढांचे में बदलाव के कारण विशेष रूप से सड़क, मोटर परिवहन, रोजगार, टेलीकम्यूनिकेशन, इन्सश्योरेंस, एयरपोर्ट आदि क्षेत्रों में आशातीत व सकारात्मक परिणाम मिले हैं। लेकिन आर्थिक व्यापारिक उदारीकरण के ऋणात्मक परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं। उनमें (1) वैश्विक प्रतिद्वंद्वता के फलस्वरूप विदेशी कम्पनियों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का भारत के घरेलू बाजारों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है। भारत में ऑटोमोबाइल के क्षेत्र में कुछ कार कंपनियों जैसे फियट, एम्बेसेडर पर भारी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। फिएट कार के उत्पादन को बंद करना पड़ा। (2) भारतीयों में विदेशी ब्रांड का असर बढ़ता जा रहा है। युवा पीढ़ी के लोग छोटे–मोटे काम जैसे कॉल सेंटर्स से पैसा कमाकर विलासिता की वस्तुओं पर पैसा खर्च कर रहे हैं। (3) लोकल बाजारों में भारतीय माल के प्रति रुझान कम होता जा रहा है। (4) भारत का उद्योग श्रम प्रेरित था वह पूंजी–प्रेरित होता जा रहा है। (5) कृषि क्षेत्र पिछड़ता जा रहा है जो सबसे बड़ी चिंता का विषय है। (6) बेरोजगारी में वृद्धि हुई है। (7) उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्राइवेट विश्वविद्यालयों के अंधाधुंध विस्तार से अनुसंधान व गुणवत्ता शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। 2016 की प्रिसंटन मूल्यांकन के अनुसार भारत का कोई भी विश्वविद्यालय, केवल प्रबंधन संस्थाओं को छोड़कर, टॉप 200 विश्वविद्यालयों में नहीं है।

भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक मूल्यों का त्यागकर भारतीय युवा पश्चिमी संस्कृति की ओर आकृष्ट होता जा रहा है। परिवार टूट रहे हैं, संयुक्त परिवार की प्रथा तेजी से गायब होती जा रही है. न्यायालयों में तलाक के मामले बढ़ते जा रहे हैं। अंतजातीय विवाह एवं लिव–इन रिलेशनशिप का फैशन बढ़ता दिखाई दे रहा है। इन नये प्रयोगों का कुछ लाभ भी है परंतु उनके नुकसान अधिक है। भारत की प्रतिभा विदेशों की ओर रूख कर रही है। विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार जॉन गेडिस का मत है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक टूटन को जन्म दिया है, सामाजिक स्थिरता एवं सामुदायिक सौहार्दता को तार–तार करता है। निःसंदेह सांस्कृतिक विविधता

जो भारतीय संस्कृति की आत्मा है उस पर साम्प्रदायिक शक्तियाँ हावी होती जा रही है। जिनका उद्देश्य संस्कृति पहनावा को थोपना है। इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना अनिवार्य हो गया है। अन्यथा भारत जैसे देश में विविध धर्मों, आस्थाओं एवं संस्कृतियों के लोगों में देश भावना, राष्ट्रीय प्रेम के प्रति मोह भंग हो सकता है। इससे भारत की एकता व अखण्डता को खतरा है।

संदर्भ सूचीः–

1. सिंह एस.एनः राजनीति विज्ञान शब्दकोष रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पृष्ट सं0–213
2. विस्वाल तपन (संपा) अंतर्राष्ट्रीय संबंध ओरिएंट ब्लेक स्वॉन प्रा.लि. हैदराबाद, संस्करण 2016, पृ.सं. 356
3. सिंहल, डॉ0 सुरेश चन्द्र, भारत की विदेश नीति, प्रकाशक–लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, संजय प्लेस, आगरा, 282002, पेज नं0 365–367
4. सेन अमृत्यः हाउ टू जज ग्लोबलाईज्म, दी अमेरिकन प्रोस्पेक्ट, वाल्यूम–13, संख्या–1, जनवरी 2002, पृ. सं. 1–14
5. आर्चर एम.एस.: सोसियोलोजी फॉर वन वर्ल्ड यूनिटी एण्ड डायवर्सिटी इंटरनेशनल सोसियोलोजी वोल्यूम–6, संख्या–2, 1991, पृ.सं. 131–147
6. तथैव पेज नं0–21
7. राय, गांधी जी, स्वतंत्रता के बाद भारतीय राजनीति, प्रकाशक–भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स) पटना–800003, पेज नं0 298–301